किसानों की
आवाज
का दस्तावेज

cecoedecon

सीमित वितरण हेतु

आवाज...

वर्ष -12 अंक -20 अप्रेल 2023 -मार्च 2024

किसान सेवा समिति महासंघ

Contact Phone: 91-7414038811 / 7414038822 • www.cecoedecon.org.in

समस्याओं को लेकर दिए ज्ञापन

भास्कर न्यूज़ | शाहबाद

जिले में पहुंचे ऊर्जा मंत्री हीरा लाल नागर और शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर को सहरिया समाज के लोगों ने ज्ञापन देकर समस्याओं के समाधान की मांग की है। किसान सेवा समिति अध्यक्ष मधुरालाल सहरिया ने बताया की बिजली कनेक्शन, ट्रांसफार्मर डिमांड जमा होने के 90 दिन के अंदर दिलवाया जाए। सहरिया चौरासी अध्यक्ष मुन्नालाल सहरिया ने बताया कि सहरिया कृषकों को बिजली कनेक्शन पर अनुदान राशि समय पर दी जाए। सहरिया छात्र संगठन अध्यक्ष जुगराज सहरिया ने बताया कि सहरिया छात्रों को छात्रवृत्ति के आवेदन आ रही समस्याओं का समाधान हो। चौरासी मंत्री लड्डू लाल सहरिया ने बताया कि सहरिया समाज धर्मशाला व अन्य निर्माण के लिए सीताबाड़ी में भूमि आवंटन किया जाए। चौरासी कोषाध्यक्ष प्रमोद सहरिया ने बताया की किशनगंज शाहबाद क्षेत्र में राजकीय विद्यालयों में अध्यापकों की कमी को पूरा किया जाए। सहरिया युवा छात्र संगठन कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र सहरिया ने बताया कि सहरिया अभ्यर्थियों को 2017-18 में सरकार द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए निशुल्क कोचिंग की व्यवस्था की थी। जो 2018 के बाद से ही बंद है। कोचिंग व्यवस्था को शुरू करें। जिस भूमि

शाहबाद. समस्याओं के निराकरण के लिए मंत्री को देते हुए।

नामदेव समाज ने किया मंत्री का स्वागत

बारां. नामदेव समाज ने मंत्री का स्वागत किया।

बारां | शहर में राजस्थान सरकार के दोनों मंत्रियों के प्रथम आगमन पर बारां नामदेव छीपा समाज की ओर से नामदेव

अमिट अक्षर

दैनिक समाचार पत्र | मो. नं. 9462377309

सहरिया समाज की विभिन्न समस्याओं को लेकर सौंपा ज्ञापन

(अमिअ अक्षर)

बारां, 13 फरवरी। सहरिया छात्र संगठन और सहरिया समाज के संयुक्त तत्वावधान में छात्र संगठन के पूर्व अध्यक्ष सुरेश सहरिया की अगुवाई में जिला कलक्टर को मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति के नाम सहरिया समाज की विभिन्न समस्याओं को लेकर ज्ञापन दिया गया है।

ज्ञापन में बताया गया कि बारां जिले के सभी महाविद्यालय वर्ष 2024 में रेगुलर अध्ययनरत सहरिया छात्र-छात्राओं के छात्रवृति प्रतिवर्ष बीए, एमए, बीएड में दी जाती है। छात्रवृति हेतु ऑनलाइन आवेदन प्रारंभ तिथि 18 दिसंबर 2023 से 15 मार्च 2024 तक है। इसमें अभी तक बहुत से छात्र-छात्राओं के एसएसओ 2020 की भांति महाविद्यालय के प्रवेश रसीद, जाति प्रमाण पत्र व बैंक डायरी से आवेदन पत्र लिया जाए।

वहीं समाज की ओर से प्रधानमंत्री जनमन आवास योजना में आ रही समस्याओं का तत्काल समाधान की भी मांग की है। सुरेश सहरिया ने बताया कि प्रधानमंत्री स्थल के पट्टे की मांग को हटा दिया जाए या बिना पट्टा आवास निर्माण करने दिया जाए या फिर वन भूमि से सभी सहरिया परिवार को जिस स्थान पर रह रहा है उस स्थान का वन विभाग से पट्टे जारी करवाया जाए। तब जाकर सहरिया परिवार को जनमन योजना का लाभ प्राप्त हो सकेगा। ज्ञापन देने वालों में

भीतर के पन्नों में

1. ये कैसा विकास प्रजातन्त्र ?
2. जैव विविधता व भारतीय संस्कृति
3. पशु–पक्षी प्रहरी – विश्नोई समाज
4. पूज्य धन्ना जी की पावन धरा
5. प्रेरक प्रसंग
6. जलवायु परिवर्तन के वैश्विक सम्मेलन में भागीदारी
7. सरकार का साहसिक कदम (अतिक्रमण मुक्त राजस्थान)
8. बगावत
9. कृषि से बढ़ती आय
10. महिला आत्मनिर्भरता के लिये इंडसइंड बैंक के साथ साझेदारी
11. देशज़ खाद्यान्न महोत्सव
12. पंचायती राज कार्यशाला
13. सरकारी – गैर–सरकारी समन्वय कार्यशाला
14. अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर जरुरतमंद बालिकाओं को स्कॉलरशिप–
15. और गोचर भूमि उपवन बनी

किसान सेवा समिति महासंघ
(स्वराज कैम्पस), एफ-159-160
सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थागत
क्षेत्र, जयपुर-302022
द्वारा प्रकाशित

सम्पादकीय ....

ये कैसा विकास प्रजातन्त्र ?

प्रखर स्वतन्त्रता सेनानी जयप्रकाश नारायण ने तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू के बार–बार अनुरोध के बावजूद केन्द्र सरकार में मन्त्री पद लेनास्वीकार नहीं किया, ऐसे ही मन्त्री पद का प्रस्ताव नाना जी देशमुख ने तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी के सामने विनम्रता से अस्वीकार कर दिया और ग्राम का समग्र विकास, पर्यावरण संरक्षण के साथ देश को नैतिकता चारित्रिक जीवन मूल्यों के साथ समाज सेवा के कण्टकाकीर्ण मार्ग पर चल व्यवस्था परिवर्तन की देश व समाज को सीख दी।

1960–1970 के दशक तक राजनीति लोक जागरण थी, सामाजिक परिवर्तन की वाहक थी, सभी दलों में विचारधारा से ओतप्रोत, बुद्धिजीवी, सिद्धान्त, निष्ठा, त्यागी लोग समाज सेवा सुशासन का भाव लिये राजनीति करते थे, आमजन का नेताओं के प्रति श्रृद्धा का भाव था।

पर आज राजनीति भ्रष्टाचार के दल–दल में फंसकर घोर अवसरवादिता व चारित्रिक (चारित्रिक) संकट के दौर से गुजर रही है। अनेक आपराधिक पृष्ठ भूमि के लोग नीति–निर्माता बन रहे हैं। लोकतन्त्र के पवित्र मन्दिर (संसद) में जल, नदियॅा, वन, पर्यावरण, पहाड़ आदि के विनाश, कृषि क्षेत्र, भ्रष्टाचार–आमजन की मूलभूत सुविधाओं, कुपोषण, सामाजिक भेदभाव, विदेशों में जमा काले धन आदि विभिन्न समुदायों से जुड़े मुद्दों पर सार्थक बहस नहीं होती। सत्ता पक्ष द्वारा भी बिना संसद में बहस व विपक्ष को विश्वास में लिये बिना ही जनता पर तानाशाही पूर्वक निर्णय थोपने की प्रक्रिया चल पड़ी है।

जहॉं तक भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में विवेचना करें, आज की चुनावी रणनीति में आदर्शवाद विचारधारा व सिद्धान्त, निष्ठा के लिये कोई जगह ही नहीं रह गयी है। राजनीति धनबल, बाहुबल, जातिबल के साथ, जाति, धर्म, पन्थ के भंवर में फंस गयी है। माननीयों की नीलामी होकर सरकार गिराने व बनाने व दल– बदल का घृणित खेल चलने लगा है। यहां धन कहॉं से आता है? राष्ट्रीय जांच एजेन्सीज की इनमें क्या भूमिका है? सत्ता दल में आते ही आरोपी नेता पवित्र क्यों हो जाता है ? विदेशों में जमा काला धन पर गम्भीर परिणाम नहीं आ रहे? आखिर क्यों ?

महा नरेगा भ्रष्टाचार का केन्द्र बिन्दु बन गयी है, लाखों–करोड़ों रूपये के कार्यों का कभी प्रामाणितकता से भौतिक सत्यापन हुआ? भ्रष्टाचार पर ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर तक चैन सिस्टम को कौन तोड़ेगा? क्या कोई जवाबदेह है? अनुत्तरित है। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अनेक ऐतिहासिक फैसले लेकर देश के भ्रष्टाचार व भ्रष्ट राजनैतिक प्रणाली पर करारा प्रहार किया है, जो शुभ संकेत है। आज हमारा पूरा समाज–जीवन ऊपर से लेकर नीचे तक भ्रष्टाचार का असहाय/ बन्दी बन गया है।

युवा मन व्यथित है, प्रतिभाएं विदेशों में पलायन कर रही है। युवा देश के विकास व अर्थव्यवस्था में हाथ बंटाना चाहता है, पर अवसर बिना युवा छटपटा रहा है, आवाज निकल रही है, हमें आजादी चाहिये भ्रष्टाचार से, गरीबी से, जातिगत भेदभाव से, आर्थिक विषमता से, भ्रष्ट राजनेताओं से। देश को किसी महात्मा गांधी, डॉ. अम्बेडकर, जय प्रकाश नारायण, नाना जी देशमुख जैसे विरक्त नेता की तलाश है। जो समाज व राष्ट्र में नैतिक क्रान्ति का आगाज कर सकें।

संरक्षक व मार्गदर्शन : श्रीमती मंजू जोशी

संपादक : भगवान सहाय दाधीच

ग्राफिक्स : रामचन्द्र शर्मा एवं भँवरलाल

जैव विविधता व भारतीय संस्कृति

पूरी दुनियॉ के सामने पर्यावरण संकट बहुत बड़ी समस्या है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर इस गम्भीर मुद्दे पर चर्चा होती रहती है।

पर्यावरणविद बार–बार चेतावनी देते रहे हैं कि प्रकृति का विनाश इतना आगे बढ़ गया है कि इससे मानव जाति एवं सभ्यता के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग गया है, वन क्षेत्र नष्ट हो रहे हैं, नदियॉ सूख रही है, जहरीली हो रही है। वायु में भी घोर प्रदूषण है; पशु–पक्षियों की अनेक प्रजातियॉ विलुप्त होने के कगार पर है। प्रकृति की अनमोल विरासत पानी का नीजिकरण हो रहा है। जबकि प्रकृति के साथ सद्भाव से रहना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। भारतीय परम्पराऐं, रीति–रिवाज और धार्मिक मान्यताऐं हमे वनस्पतियों एवं जीवों के संरक्षण का सन्देश देती है।

भारतीय वेदों में सूर्य, चन्द्रमा, वायु, पानी, नदियॉ, पेड़ों, पहाड़ों का देवताओं के रूप में उल्लेख है कि ये स्वास्थ्य, धन व समृद्धि के देने वाले हैं। सिख समुदाय की परम पवित्र धर्मग्रन्थ गुरू वाणी में भी वर्णन है कि वायु ही गुरू है, जल पिता है व पृथ्वी सभी की महान् माता है। बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म भी वनस्पतियों, जीवों व प्रकृति के प्रति सहिष्णुता प्रेम, करूणा, क्षमा, अहिंसा का मार्ग स्वीकार करते हुये पृथ्वी पर किसी भी प्राणी की हत्या को वर्जित मानता है, वृक्षों को भारतीय संस्कृति में पूजनीय माना जाता है।

वृक्षों की अनेक प्रजातियां पीपल, बड़, खेजड़ी, बेल, गुलर, नीम, रूद्राक्ष, कदम्ब, नारियल आदि धार्मिक अनुष्ठानों के उपयोग के साथ देवी–देवताओं के प्रिय माने जाते है, जिससे मानव भी इन्हें संरक्षित रखें; व पर्यावरण शुद्ध रहे। बौद्ध धर्म में साल व पीपल के वृक्ष की पूजा होती है, मान्यता के अनुसार भगवान बुद्ध ने साल वृक्षों के नीचे ही जन्म लिया और परिनिर्वाण प्राप्त किया, बोध गया में पीपल के वृक्ष के नीचे बोध की प्राप्ति की।

जैन परम्परा में भी पवित्र वृक्ष तीर्थंकारों के साथ जुड़े हुये हैं; पूज्य ऋषभदेवजी के साथ बरगद, सागवान नाथजी और भगवान महावीर के साथ साल, पूज्य शीतलनाथ के साथ बेल, वसू पूज्य के साथ कदम्ब, अनन्तजी के साथ पीपल, पूज्य मल्लिनाथ के साथ अशोक वृक्ष। सिख समुदाय में बेर का पेड वन्दनीय है। क्योंकि पूज्य गुरू नानक देवजी ने सुल्तानपुर लोधी में बेइन नदी के तट पर बेर का पौधा लगाया था और पूज्य गुरू गोविन्द सिंहजी लुधियाना जिले के सिलोना के एक गांव में बेर के पेड के नीचे रूके थे। दोनों स्थलों को धर्मस्थली में बदल दिया गया है।

जीवों में भगवान कार्तिकेय के लिये मोर का शिकार कभी नहीं किया जाता है। हाथी के सिर के साथ प्रथम पूज्य गणेश जी के कारण हाथियों एवं वाहन के रूप में चूहे की हम रक्षा करते हैं। भगवान शिव एवं नाग की पूजा के साथ सांप का सम्बन्ध, देवी के वाहन के रूप में बाघ का होने से विषैले व नरभक्षी जन्तुओं के प्रति श्रद्धा भाव होने के हम इन्हें संरक्षित रखते है। जंगली जानवरों के प्रति भी अहिंसा व करूणा का भाव रहा है भारतीय संस्कृति में। इन धार्मिक मान्यताओं ने पर्यावरण सन्तुलन रखने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

देश के अनेक हिस्सों में वनों में कमी आने के बावजूद अभी भी रेगिस्तान में ओरण (पवित्र वन) आदर्श रूप से बरकरार है एवं यहॉ जैव विविधता बेहद समृद्ध है। यह भूमि किसी देवता, लोक देवता के नाम समर्पित होती है एवं इन्हें संरक्षित रखते हुये पूजा जाता है, राजस्थान के अलावा केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडू के कई हिस्सों में इनकी संख्या बहुतायत में है। केरल में सैंकड़ो छोटे–छोटे पवित्र उपवन है, जिन्हें सर्पकाबू कहा जाता है, जो सर्पों के लिये समर्पित है।

ओरणों के प्रति समाज में बेहद श्रद्धा का भाव है। इनसे विभिन्न वनस्पतियों की प्रजातियां, निर्भय होकर पशु– पक्षियों की ध्वनि से चहकते ये उपवन आस्था के केन्द्र बने हुये है। इतिहासकार व पर्यावरणविद भी स्वीकार करते हैं कि भारतीय

परम्पराओं एवं प्रकृति पूजा भाव के कारण भारत आज भी विश्व के अन्य देशों के वनिस्पत जैव विविधता में समृद्ध है। अनेक पश्चिमी चिन्तक तो प्रकृति को उपभोग की वस्तु का दावा करते रहे है, जो भ्रामक है।

भारत क्षेत्रफल में विश्व में मात्र 2.4% हिस्सा होते हुये भी जैव विविधता में 8 प्रतिशत से अधिक भागीदारी रखता है। प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ती निर्भरता, बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिक विकास की तेज गति के बावजूद भारत का पर्यावरण व जैव विविधता अपेक्षाकृत सुरक्षित है तो इसका कारण भारत की प्राचीन संस्कृति मान्यताऐं है। पर्यावरण संरक्षण में पारम्परिक तरीके को स्वीकार कर आगे बढ़ने का विकल्प शेष है।

पशु–पक्षी प्रहरी - विश्नोई समाज

एक ओर देश पर्यावरण सम्बन्धी वन्य जीवन की समाप्ति की समस्या से जूझ रहा है तो दूसरी ओर पंजाब, हरियाणा और राजस्थान की सीमा पर विश्नोई समुदाय बहुल ऐसे गॉव हैं, जिनको केन्द्र सरकार ने वन्यजीव अभयारण्य स्थल घोषित किया हुआ है।

विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक गुरू जम्भेश्वरजी महाराज ने अपने शिष्यों को हरे पेड़ों व जीवों की रक्षा करने का मन्त्र दिया, यहां भारत की ऋषि मुनियों, मनीषियों की पावन धरा पर दूरदृष्टि रखने वाले पूज्य गुरू जम्भेश्वर जी महाराज ने पर्यावरण सम्बन्धी खतरों को आज से सैंकड़ों वर्ष पूर्व पहचान लिया था।

लगभग 26000 वर्ग किलोमीटर फैले इस अभयारण्य में हिरण, नील गायें, काले हिरण, जंगली बिल्लियां, गीदड़, लोमड़ियां भारी संख्या में खरगोश, तीतर–बटेर जैसे अनेक तरह के पशु–पक्षी निर्भय होकर विचरण करते हैं, किसी के खेत में हिरण घुस जाये तो किसान अपने–आपको धन्य समझता है। यह वन्यजीव (पशु–पक्षी) इतने निर्भय है कि आवासीय क्षेत्रों में घुस जाते है। रात के समय यहां वाहन गुजरते समय हॉर्न बजाने पड़ते हैं। ताकि कोई पशु इसकी चपेट में न आये।

प्राकृतिक रूप से रेत के टीलों (धोरों) वाली इस जमीन पर हरे पेड़ बहुतायत में पाये जाते है। विश्नोई समाज ने बाकायदा जीव रक्षा संगठन का निर्माण किया है। जिसके संस्थापक स्वर्गीय श्री सन्त राम जी विश्नोई को राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती इन्दिरा गांधी पुरस्कार मिल चुका है। आज इन्हीं के मार्ग पर चलते हुये समाज के लोग जीवों की रक्षा के लिये जी जान से जुड़े है। गो–रक्षा में भी इस संगठन का बहुत बड़ा योगदान है। विश्नोई समाज के भय से कोई पशु तस्कर इस इलाके से गो वंश की तस्करी करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता।

— राकेश सैन

पूज्य धन्ना जी की पावन धरा
भक्ति एवं सामाजिक समरसता का अदभुत संगम

दूदू जिले के फागी–दूदू सड़क मार्ग पर रामनाड़ा से 5 कि. मी. एवं भरतपुरा से 4 कि.मी. दूरी पर स्थित है, उच्च कोटि के कृष्ण भक्त एवं कवि पूज्य धन्ना भगतजी की पावन धरा चौरू ग्राम।

चौरू ग्राम के चारों ओर करीब 8 सरोवर, बांध, उन पर लहलहाते बड़, पीपल, नीम आदि के पवित्र वृक्ष, तथा ग्राम में विभिन्न देवी–देवताओं के प्राचीन ऐतिहासिक करीब 9 मन्दिरों में अनवरत चलते अखण्ड दीप, रामायण के पाठ ग्राम को धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होने की गवाही दे रहे है। विभिन्न धर्म ग्रन्थों/ प्रसंगों के अनुसार इसी ग्राम में धन्ना जी का जन्म कृषक परिवार (जाट) में हुआ था। इनके पिताजी मुख्य रूप से गोपालन व कृषि कार्य किया करते थे।

एक दिन धन्ना जी के परिवार के कुलगुरू पं. त्रिलोचन जी तीर्थयात्रा कर ग्राम के साक्षी गोपाल मन्दिर में पधारे! बालक धन्नाजी नित्य पिताजी के साथ मन्दिर जाते, वहाँ देखते पं. त्रिलोचन जी बडे भाव से शालीग्राम जी भगवान की पूजा करते, पुष्प अर्पित करते एवं शालग्रामजी को भोग लगाने के बाद भोजन ग्रहण करते बालक धन्ना यह बडी तन्मयता से देखता, उसे भगवान की सेवा बहुत ही पसन्द आयी।

कुछ दिनों बाद पण्डितजी जाने लगे तो बालक धन्ना शालीग्राम जी मूर्ति लेने की ज़िद करने लगा, मुझे ठाकुरजी चाहिये, मैं भी पूजा करूंगा, इन्हें भोजन कराऊंगा। धन्ना रोने लगे, अनुनय विनय करने लगे। माता– पिता ने बहुत समझाया, वे नहीं माने, अगले दिन पण्डितजी नदी में स्नान करने गये, तो बड़ा सा काला पत्थर, बडे ठाकुरजी बताकर धन्ना जी को दे दिया। अब ठाकुर जी पाकर धन्ना जी भाव विहृल प्रसन्न हो, उनकी सेवा में जुट गये। धन्ना जी जब गाय चराने जाते अपने ठाकुरजी को भी साथ ले जाते।

धन्ना जी का मां ने बाजरे की रोटी, साग, अचार एवं गुड़ उनको खाने के लिये दिया। अब धन्ना जी ने प्रेम से पुकार ठाकुर जी से भोग लगाने की प्रार्थना की पर भगवान ने प्रकट होकर भोजन ग्रहण नहीं किया तो धन्ना जी ने भी दृढ़ निश्चय कर लिया, जब तक ठाकुरजी भोग नहीं लगायेंगे वे भी भोजन ग्रहण नहीं करेंगे। धन्ना जी ने वह रोटी गाय को खिला दी, भक्त एवं भगवान तीन दिन भूखे ही रहे।

चौथे दिन मां भोजन लेकर आयी, धन्ना जी जोर–जोर से रोने लगे, ठाकुर जी आप छप्पन भोग जीमते हो पर मैं बालक तीन दिन से भूखा व परेशान हूं आपको दया नहीं आती, करूण पुकार सुन साक्षात् भगवान प्रकट हो गये, अपने ठाकुर जी के दर्शन कर धन्ना जी धन्य हो गये और बाजरे की रोटी, साग, गुड़ भगवान चाव से खाने लगे। चार रोटियों में से दो रोटी खाने के बाद भगवान तीसरी रोटी खाने लगे तो बालक धन्ना ने भगवान का हाथ पकड़ लिया। मैं भी चार दिन से भूखा हूँ ठाकुरजी मुस्कराने लगे, बची हुयी दो रोटियॉ धन्ना जी ने खायी। यह रोज का नियम बन गया धन्नाजी गाये चराने जाते, तो भक्त एवं भगवान साथ–साथ भोजन करते।

एक दिन ठाकुर जी ने कहा मैं मुफ्त में रोटी नहीं खाना चाहता, अब मैं तुम्हारी गायें चराया करूंगा व स्वयं भगवान भक्त की गायें चराने लगे! धन्ना का तन–मन कृष्णमय हो गया। धन्ना जी खूब सन्त सेवा करने लगे, कोई भी सन्त धन्नाजी के घर आते वे बडे प्रेम से उनकी सेवा कर भोजन कराते। सन्तों की निश्चल सेवा करने से दूर–दूर के सन्त पधारने लगे। धन्ना जी प्रेम से सत्कार कर भोजन कराते। एक दिन पिताजी ने कहा साधू सेवा करनी है तो पहले कमाई करो, अब सन्तजन घर पर नहीं आने चाहिये।

बालक धन्ना जी उदास हो गये, पिताजी ने डांटते हुये कहा, जाओ गेहूं का बीज लेकर खेतों में बीज बो आओ, धन्ना जी बैलगाडी में बीज रखकर चल दिये। रास्ते में साधू–सन्तों की टोली मिली, धन्ना जी उन्हें साष्टांग प्रणाम किया व भोजन के लिये गेहूं बीज बेचकर सन्तों के भोजन की व्यवस्था की। उन परम सन्तों ने धन्ना जी की सेवा से प्रसन्न हो, उन्हें तुम्बा दिया, व कहा इनके बीज को खेतों में बो दो। इसकी फसल पक जाये उससे जो प्राप्त हो वह परमार्थ में खर्च करना। उन्होंने सन्तों की आज्ञा को आर्शीवाद मान तुम्बा खेतों में बो दिए व घर आ गये। पिताजी ने पूछा बो आया, उन्होंने कहा हॉ बो आया लोग कहते धन्ना पागल हो गये, पर कुछ दिन बाद तुम्बा फसल उग आयी। धन्ना जी ने सोचा अब

इन तुम्बा से कमण्डल बनाकर सन्तों को दिया करेंगे। उन्होंने जैसे ही तुम्बा कमण्डल बनाने के लिय काटा, उसमें हीरे–मोती भरे थे। आज भी चौरू में वह खेत मोती सागर बांध आज भी उसका साक्षी है। धन्ना जी को भगवान की कृपा का अहसास हुआ व सन्तों की आज्ञा व बात मान सारा धन परमार्थ एवं सन्त सेवा में खर्च करने लगे।

एक दिन ठाकुर जी ने कहा धन्ना, काशी जाओ वहां जगदगुरू रामानन्दाचार्य जी मेरे स्वरूप में ही विराजमान है, तुम उनके शरणागत होकर गुरू दीक्षा लो। ठाकुर जी के कहे अनुसार धन्ना जी ने काशी जाकर पूज्य श्री रामानन्दाचार्य की शरणागति प्राप्त कर शिष्यत्व ग्रहण किया। पूज्य रामानन्दाचार्य जी ने जॉत–पॉत पुंछे नहीं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई। का भक्तजनों को आदेश व सन्देश दिया। इनके प्रमुख 12 शिष्यों पीपा जी, रैदास जी, कबीर दास जी व धन्ना जी सहित सभी जातियों के भक्त शामिल थे। गुरू जी ने धन्ना जी को आदेश दिया जाओ सतसंग– भजन कीर्तन कर धर्म प्रचार करो एवं मानव कल्याण का कार्य करो। गुरूजी का आदेश शिरोधार्य कर उसी मार्ग (पथ) पर धन्नाजी चल पड़े। कृष्ण के अनन्य भक्त धन्ना जी के चौरू नोखा नाडी स्थित भव्य मन्दिर में बैशाख सुदी अष्टमी को विशाल महोत्सव होता है।

इस भक्ति व श्रृद्धाभाव के मेले में राजस्थान सहित विभिन्न प्रान्तों के समाज के सभी जाति – समुदायों के श्रृद्धालू बिना किसी भेदभाव के पूजा अर्चना कर सामाजिक, समरसता का सन्देश देते है व मनोति मांगते हैं। मन्दिर के सामने धुणी में अखण्ड ज्योति प्रज्वलित रहती है व नोखा नाडी है। धुणी की भस्म एवं जल– ग्रहण करने से भक्तजनों की मनोकामना पूर्ण होती है एवं असाध्य रोग ठीक होते हैं। नोखा नाड़ी के मिट्टी, पानी छिड़काव से खेत रोगाणुमुक्त होते हैं। महोत्सव में भजन–कीर्तन, कथाऐं चलती रहती है व भण्डारा चलतारहता है। यहॉ पूर्णिमा एकादशी के साथ हर दिन श्रृद्धालुओं का आवागमन बना रहता है।

ग्राम चौरू में ही सिख समुदाय द्वारा निर्मित पूज्य धन्ना जी भगत का गुरूद्वारा है। यहाँ फरवरी के आखिरी रविवार को होते आ रहे महोत्सव में राजस्थान सहित पंजाब, हरियाणा के भक्त जन भाग लेते है। कार्यक्रम में भजन–कीर्तन पवित्र गुरू वाणी का उपदेश, सहित विभिन्न धार्मिक सन्देश का सीधा प्रसारण भी होता है, लंगर चलता रहता है।

पूज्य धन्ना जी भगत की भक्तमाल में जीवन प्रसंग व कथा है, तो धन्ना जी द्वारा गाये गये कई पदो को पूज्य गुरू ग्रन्थ साहिब की गुरू वाणी में भी उल्लेख हैं। मन्दिर के पूजारी श्री बजरंग दास जी स्वामी एक दोहा सुनाते हैं।

धन्ना धरा मोजाद की, चौरू चोखा गॉव।
नोखा नाड़ी निपजे धन्ना भगत के नाम।।

पूज्य धन्ना जी भगत की भक्ति स्थल, तपस्थली, पावन साक्षी गोपाल महाराज मन्दिर में भक्तगण दर्शनार्थ आते–जाते रहते हैं।

प्रेरक प्रसंग

अनाथ माता

1869 के भीषण अकाल में सौराष्ट्र में माता–पिता की मृत्यु होने पर भूख–प्यास के मारे अनाथ बच्चे इधर– उधर भटक रहे थे।

एक गॉव में राम बाई गौना होकर ससुराल जाने वाली थी, उसी ग्राम में भी इन अनाथ बच्चों का झुण्ड आ गया, ग्राम के युवकों ने सोचा, यह मुसीबत कहॉ से आ गयी। स्वयं के लिये खाने के लिये कुछ नहीं इन बच्चों को कहॉ से लाकर खिलायेंगे। वे युवक उन अनाथ बच्चों से मारपीट करने लगे। वे भूखे अनाथ बच्चे हाय मॉ हाय बाबू कहकर इधर–उधर दौड़ने लगे।

राम बाई ने जब यह चीख–पुकार सुनी तो उससे नहीं रहा गया, उसका कोमल ह्रदय पसीज़ गया। वह ममता की साक्षात् मूर्ति बन उन युवकों व अनाथ बच्चों के बीच में खड़ी हो गयी, व उसने डांटकर उसने हुंकारा– खबरदार अब यदि इन प्रकृति से मरे हुये बच्चों को मारने के लिये एक भी आगे बढ़ा तो खैर नहीं, इन अनाथ बच्चों को मारते तुम्हें थोड़ी दया व लज्जा नहीं आती।

फिर वह सब अनाथ बच्चों को लेकर गांव में आ गयी। उसने अपने माता–पिता एवं गौना करने आये ससुराल वालों से करबद्ध निवेदन किया। इन अनाथ बच्चों की दुर्दशा मुझसे नहीं देखी जाती, मैं पारिवारिक बन्धन में नहीं बँध सकती, एवं सर्वस्व त्यागकर इन अनाथ बच्चों का लालन–पालन करने का निश्चय कर लिया है, अतः आप मुझे विवाह के बन्धन से मुक्त कर दें, रामबाई का निश्चय सुन सभी हतभ्रत रह गये। परिवारजनों व सगे–सम्बन्धियों ने बहुत समझाने–बुझाने का प्रयास किया पर वह तो कांटो भरी राह (समाज सेवा) पर चलने का अटल संकल्प ले चुकी थी, वह नहीं मानी।

राम बाई इन अनाथ बच्चों को लेकर भजन गाती हुयी गांव–गांव, घर–घर इनके लिये भिक्षा मॉगने लगी, जब लोगों ने राम बाई की निष्ठा, निस्वार्थ त्याग भक्तिभाव से की जाने वाली सेवा को देखा तो वे मुक्त हस्त से सहायता करने लगे। उनकी यह छवि, प्रशंसा, ख्याति आस–पास के क्षेत्र में फैलने लगी। अब वह अहीर युवती अनाथ माता के नाम से प्रसिद्ध हुयी, कुछ समय में राम बाई का अनाथाश्रम बन गया और उसमें गरीब लोगों के लिये सदाव्रत (निशुल्क) भी स्थापित कर दिया। सम्पूर्ण जीवन सेवा में लगा देने वाली राम बाई समाज के लिये अनुपम आदर्श व प्रेरणा है।

जलवायु परिवर्तन के वैश्विक सम्मेलन में भागीदारी

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जलवायु परिवर्तन पर आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सिकोईडिकोन संस्था की भागीदारी रही। 19 नवम्बर से 12 दिसम्बर, 2023 तक दुबई में आयोजित सम्मेलन में पूरी दुनिया से लगभग 1 लाख लोगों ने भागीदारी की, जिसमें विभिन्न देशों के प्रमुख, मंत्री, उच्च अधिकारी, स्वैच्छिक संस्थाएं, सिविल सोसायटी, मीडिया समूह शामिल थे।

सम्मेलन में मुख्यतः जीवाश्म ईधन के उपयोग व उत्पादन के नियंत्रण पर गंभीर मंथन हुआ। इसके अतिरिक्त विकासशील व गरीब देशों के प्रतिनिधियों ने लॉस एण्ड डैमेज फंड के क्रियान्वयन की प्रक्रिया पर सवाल उठाए।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ग्रीन कार्बन क्रेडिट का विचार प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन में सिकोईडिकोन व पैरवी संस्था द्वारा सामूहिक रूप से साइड ईवेंट आयोजित हुए, जिनमें क्लाइमेट फायनान्सिंग, खेती व वंचित समुदाय से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया। सिकोईडिकोन व पैरवी संस्था की ओर से श्री अजय झा, श्री सौम्या दत्ता, सुश्री विभुति जोशी, सुश्री चारू जोशी व डॉ. आलोक व्यास ने भागीदारी की।

सरकार का साहसिक कदम (अतिक्रमण मुक्त राजस्थान)

किसान सेवा समिति महासंघ पिछले 10 वर्षों से माननीय मुख्यमंत्रीजी एवं माननीय मुख्य सचिव महोदय, राजस्थान सरकार से मिलकर चरागाह भूमि, तालाबों भूमि को अतिक्रमण मुक्त करने का आग्रह करता रहा है व आगाह करता रहा है, यह मुद्दा पर्यावरण सन्तुलन, जैव विविधता संरक्षित रखने के साथ आम–जन की आजीविका से जुड़ा हुआ मुद्दा है। महासंघ ने तथ्य भी रखें, पर सरकारों ने जनहित के मुद्दे पर न संवेदनशीलता दिखायी न किसी की जवाबदेही तय की।

नवनिर्वाचित मा. भजन लाल शर्मा सरकार ने सार्वजनिक भूमि (चरागाह– तालाबी– आबादी) पर दूर दृष्टिगत ऐतिहासिक एवं नीतिगत निर्णय लेकर आम जन में आशा का संचार किया है कि सरकार परम्परागत प्राकृतिक धरोहर बचाने पर व बेहद गम्भीर है। सरकार इससे अवैध अतिक्रमण कर्ताओं (दबंगो – भू माफिया) के खिलाफ कठोर कार्यवाही हेतु संकल्पित दिखायी दे रही है।

11 फरवरी, 2024 को माननीय शासन सचिव महोदय व आयुक्त महोदय, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग राजस्थान सरकार द्वारा परिपत्र जारी कर ग्राम पंचायतों की आबादी चरागाही एवं तालाबी भूमि पर हो रहे अतिक्रमण हटवाने हेतु तुरन्त कार्यवाही के लिये निर्देशित किया। साथ ही पंचायत, पंचायत भूमि पर हो रहे अतिक्रमण हटाने के लिये सीधे ही या अपने क्षेत्र के उपखण्ड अधिकारी महोदय को प्रार्थना करते हुये राजस्थान पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा–110 के अनुसार पुलिस की सहायता लेने का अधिकार दिया। उक्त परिपत्र की अवहेलना करने वाले सरपंच / ग्राम विकास अधिकारी के विरूद्ध नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लायी जाने हेतु निर्देशित किया।

किसान सेवा समिति महासंघ इस हेतु नव–निर्वाचित राज्य सरकार मा. मुख्यमन्त्री महोदय व पंचायत राज मन्त्री जी (राजस्थान) को आभार व्यक्त करते हुऐ इस साहसिक निर्णय पर बधाई व शुभकामनाऐं प्रेषित की है कि तालाब एवं चरागाह से समाज का जीवन्त रिश्ता रहा है। पर्यावरणविदों की बार–बार चेतावनियों के बावजूद समाज व सरकार ने तालाबों व चरागाह की सार–सम्भाल नहीं की। गॉवों में हजारों तालाब होंगे व हजारों हेक्टेयर चरागाह भूमि होंगें, जिन पर भू– माफियाओं के कब्जे में होंगे।

आपके ऐतिहासिक परिपत्र से जन–जाग्रति भी होगी। समाज भी अपनी समृद्ध विरासतों (तालाब–चरागाह) को बचाने के इस अभियान के दृढ़ संकल्प के साथ सरकार के साथ–साथ चले इस हेतु महासंघ इस महा अभियान में जन जागरण में सहभागी बन कार्य करेगा।

बगावत

आजादी के प्रथम यज्ञ को साल डेढ़ सौ बीत गये।
सचमुच मंगल पाण्डे वाले बागी तेवर रीत गये।।

सच बोलू तो ग्रहण लगा है भारत की आजादी को।
हम खुद ही न्यौता दे आये भारत की बर्बादी को ।।

सन् सत्तावन से चलकर हम ए. के. छप्पन तक आये,
निश्चित मंगल पाण्डे से चल हम वीरप्पन तक आये,
मृत शिशुओं में प्राण फूंकते, आज निठारी तक आये।

ऐसे इतने वर्षों पर खुश होऊँ या जीभर रोंऊ?
मन करता है, हत्यारों के सीने में गोली बोऊ।

रोती होगी आज आत्मा झांसी वाली रानी की।
आंखे खून बहाती होगी, तात्या से बलिदानी की।।

नाना साहब पेशवा शायद मन ही मन अकुलाते हो।
और बहादुर शाह देखकर दिल्ली को पछताते हो।।

क्या यह ही सपना देखा था, भारत की आजादी का,
लोकतन्त्र बन गया मुखौटा, हर कातिल अपराधी का।
इसीलिये मुट्ठी कसना हम सबकी मजबूरी है,
एक बगावत मंगल पाण्डे वाली और जरूरी है।

वह टोली कुछ ओर रही जो बेकल थी आजादी को,
यहां पगलों की भीड़ लगी जो आमादा बर्बादी को।
वे पिस्टल लेकर निकले थे, सीमा पर मिट जाने को,
ये रखते हैं जेड़ सुरक्षा अपनी जान बचाने को।।

रोज–रोज संसद लड़ती है, बेहूदी बकवासों पर।
कोई बहस नहीं होती है, रोटी, फटे लिबासों पर।।

ये ए.सी. कमरों में झूमे, व्हिस्की के पैमानों पर।
कौन यहां चर्चा करता है, अब मजदूर किसानों पर।।

अज़ब व्यवस्था कर्णधार ही भ्रष्टाचारी फसले बोयें।
कान्हा खुद ही चीर खींचते, द्रुपदा कहां कहां रोये।।

– विनीत चौहान

कृषि से बढ़ती आय

कैलाशी देवी नाडा ग्राम सिन्धौलिया नाडा की नाथ समाज से एक गरीब परिवार से है जो गृहिणी के साथ–साथ किसान भी है। गॉव की दूरी ब्लॉक से पश्चिम की ओर 20 किलोमीटर है, जो अजमेर मालपुरा मुख्य सडक पर है।

कैलाशी देवी एक साक्षर किसान है, जिसकी उम्र 32 वर्ष है परिवार मे 1 लडका व 3 लडकियॉ है। इनके पास मात्र 4 बीघा जमीन है, जिनसे इनकी आजीविका सुनिश्चित नहीं थी। मई, 2023 में संस्था द्वारा गठित ग्राम विकास समिति की बैठक आयेजित की गई,जिसमें आजीविका सुरक्षा गतिविधि के बारे में जानकारी दी गई, जिसमें स्मार्ट फार्म के तहत् किसान की आय बढ़ाने व उसकी आज़ीविका को कैसे सुनिश्चित किया जा सकता, पर बताया गया। जिसमें जैविक खेती को बढ़ावा देने पर चर्चा की गई।

इस किसान से खेती से प्राप्त होने वाली आय के बारे मे पूछा गया, जिस पर उसने बताया कि 2 बीघा में ज्वार, बाजरा व 2 बीघा मे गेहूॅ, सरसो आदि बोते हैं, जिससे पशुओ के खाने के लिए चारा व अनाज हो जाता है एवं कुछ किचन गार्डन सब्जी लगा लेते हैं, जिससे परिवार को खाने को सब्जी मिल जाती है।

इसके बाद ग्राम विकास समिति मे प्रस्ताव लेकर स्मार्ट फार्म में इस महिला किसान का चयन किया गया। अगस्त, 2023 में किसान ने 1 बीघा मे टमाटर लगाया गया। जिसमे उन्होने अच्छे किस्म के बीज एवं नए तरीके से नर्सरी तैयार की जिससे, उसके द्वारा बोए गए सभी बीज उग गए।

पौध तैयार के लिए नर्सरी के बारे मे उससे जानकारी ली, जिसमें उसने बताया कि मैंने जून, 2023 में गॉव में संस्था द्वारा किसानों का कृषि तकनीकी हस्तांतरण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण हुआ था, जिसमें भाग लिया। जहॉ पर टमाटर की नर्सरी तैयार करने की विधि बताया गया था जिसमें ट्रे की सहायता से किस प्रकार से नर्सरी तैयार की जाती है पर बताया कि ट्रे मे कोकोपीट डालकर उसमे पौध तैयार किया जाए तो जितने बीज बोए जाते है वे सब उग जाते है एवं उसमे रोग लगने की सम्भावना बहुत कम होती है साथ ही साथ बीज की मॉ़ग भी कम लगती है।

इस प्रशिक्षण के बाद मैंने अगस्त, 2023 मे संस्था के सहयोग से बीज लिया जो 50 ग्राम आधा बीघा का बीज था जिसको मैंने ट्रे विधि से तैयार किया जिसमे देखा कि जितने बीज बोए थे वे सब अंकूरित हो गए एवं नर्सरी भी बहुत अच्छी तैयार हुई।

नर्सरी तैयार होने के बाद उनको खेत मे लगाने को कार्य किया गया जिसमे पाया कि जो बीज मैंने आधा बीघा का लिया था वो एक बीघा मे आ गया।

इसके बाद उससे उत्पादन भी बहुत अच्छा हुआ जिससे उसने बताया कि एक बीघा टमाटर से उन्हे 90000 हजार रूपये की आमदनी दिसम्बर माह के अन्त तक प्राप्त हुई एवं अभी भी उसे पैदावार मिल रही है।

किसान कैलाशी देवी ने बताया कि ट्रे विधि से नर्सरी तैयार करने से बीज की मात्रा आधी लगी एवं इसी के साथ साथ पौध तैयार करने मे मेहनत कम लगी, पौध मे नुकसान की सम्भावना नही है और इस विधि से कही भी किसान पौध तैयार कर सकते है।

महिला आत्मनिर्भरता के लिये इंडसइंड बैंक के साथ साझेदारी

इंडसइंड बैंक सी.एस.आर फ्लैशिप कार्यक्रम

महिलाओं के सम्मान में बढ़ोत्तरी एवं प्रशिक्षण के माध्यम से सीखने के अवसरों को बढ़ाने हेतु सिकोईडिकोन संस्था वर्षों से प्रयासरत है।

इसी श्रृंखला में बकरी पालन एवं व्यवसायिक प्रशिक्षणों का आयोजन आकांक्षी जिला बारां में इंडसइंड बैंक सी.एस.आर. फ्लैशिप कार्यक्रम, वॉटर संस्था एवं सिकोईडीकोन के सहयोग से 200 गांवों में गैर कृषि आजीविका अवसरों के प्रयास किये जा रहे हैं। जिसमें बकरी पालन, मोरिंगा प्रोसेसिंग, फूड प्रोसेसिंग एवं मधुमुक्खी पालन पर कार्य किया जा रहा रहा हैं।

परियोजना समर्थित गांवों के युवाओं को डिज़ीटल स्किल डेवलपमेंट प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं जिसमें सरकारी एवं निजी रोज़गार के अवसर प्राप्त कर पायें।

बकरी पालन

बारां जिले के शाहाबाद, किशनगंज, छबड़ा, छीपाबडौद के 34 गांवों में 265 परिवारों को सीधे रूप से उनकी आजीविका में सुधार के लिए किया जा रहा है। महिला मुखिया के नेतृत्व में सहरिया, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं जरूरतमंदों परिवार को 5 बकरी दी गई हैं। बकरियों के टीकाकरण, बीमा करवाने के साथ ही साथ बकरी पालन के प्रशिक्षण आयोजित किये गये हैं। जिससे इस कार्यक्रम के निम्न प्रभाव दिखाई दे रहे हैं :–

1. आजीविका में बढ़ोत्तरी
2. कुपोषण को दूर करने के प्रयासों को बल मिल रहा हैं
3. रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी
4. काली चाय से निज़ात मिली हैं।
5. बकरी के बच्चे होने पर परिवार में खुशी का माहौल रहता हैं।
6. बकरी व्यापारियों की हल–चल बढ़ने लगी हैं।
7. महिला मुखियों के आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी हुई हैं।

चुनौतियां

1. जिले में पशु चिकित्सक का अभाव हैं। जिससे सेवाओं में अनियमितता रहती हैं।
2. बकरियां जंगली जानवरों की शिकार हो जाती हैं।
3. आदिवासी क्षेत्र होने के कारण गरीब लोग संपन्न लोगों के चुंगल का शिकार हो जाते हैं।

अवसर

शाहबाद व किशनगंज में बकरियों की खुली चराई के लिए चरागाह व जंगल की जमीन हैं।

मोंरिगा/सहज़न प्रोसेसिंग यूनिट

शाहबाद की ग्राम पंचायत बामनगंवा के रैदास स्वयं सहायता सहजन प्रोसेसिंग यूनिट संचालित कर रही हैं। जिसमें समूह की महिलाऐं सहजन के पत्तों का संकलन करके उनका पाउडर तैयार कर रही हैं। मोरिंगा पाउडर की पैकिंग कर समूह ने जयपुर, बारां एवं शाहबाद में प्रर्दशनी लगा कर बेचा हैं। जिससे समूह को आमदनी होने लगी हैं। भविष्य में मोरिंगा के दूसरे प्रोडेक्ट तैयार करने इनमें ब्रांडिंग एवं बाजार इत्यादि भी काम करना प्रस्तावित हैं।

इसी प्रकार से मोरिंगा प्रोसेसिंग की दूसरी यूनिट संदोकड़ा ग्राम पंचायत के पुरैनी गांव में श्याम सुन्दर स्वयं सहायता समूह द्वारा संचालित हो रही हैं। मोरिंगा के फायदे, नर्सरी एवं मोरिंगा उत्पाद तैयार करने के तरीकों पर महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया हैं।

बामनगंवा एवं पुरैनी में कच्चे माल की सप्लाई स्थानीय स्तर से हो रही हैं गांव में अधिकांश परिवारों ने मोरिंगा के प्लांट लगा रखे हैं। मनरेगा के तहत् ग्राम पंचायत द्वारा मोरिंगा सार्वजनिक वृक्षारोपण के प्रयास किये जा रहे हैं। स्थानीय स्तर इंडसइंड बैंक सी.एस.आर फ्लैगशिप प्रोग्राम के तहत् भी नर्सरी की तैयारी की जा रही हैं जिससे क्षैत्र मे इन यूनिटों को कच्चे माल की नियमित सप्लाई होती रहे।

फूड प्रोसेसिंग यूनिट

गांजन में दुर्गा स्वयं सहायता व बीलखेडा माल में जय मातादी स्वयं सहायता समूहो द्वारा फूड प्रोसेसिंग यूनिट की स्थापना की गई हैं। समूह के द्वारा स्थानीय स्तर पर लाल मिर्च, धनिया, हल्दी पाउडर तैयार करने लगे हैं। इसके लिए समूहों को मसाला यूनिट संचालन के प्रशिक्षण दिए गए हैं। समूह की आमदनी के बढ़ोत्तरी के साथ ही साथ शुद्ध प्रोडेक्ट स्थानीय बाजार में उपलब्ध कराने लगे हैं।

मधुमक्खी पालन यूनिट

शुभघरा, सड़ एवं हनौतियां गांव में तीन यूनिट मधुमक्खी पालन की शुरू की गई है, जिसमें स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देकर शहद से आमदनी बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

डिजीटल स्किल डेवलपमेंट प्रशिक्षण

इंडसइंड बैंक सी.एस.आर फ्लैगशिप प्रोग्राम समर्थित गांवों के युवाओं को डिजीटल स्किल डेवलपमेंट प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा हैं। सिकोईडीकोन शाहबाद परिसर में इस हेतु सम्पूर्ण डिजीटल उपकरण, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, इंटरएक्टिव पैनल, स्मार्ट क्लास रूम, ऑन लाईन कोर्स करने की सुविधाऐं उपलब्ध करवाई गई हैं। दो बड़े हॉल में 60 कम्प्यूटर व सोलर पैनल से अबाधित विधुत प्रवाहित रहती हैं।

सभी युवा सूचना प्रौद्योगिकी में राजस्थान राज्य प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम में अध्ययन कर रहे हैं। सभी बताते हैं कि बारां जिले तक इस प्रकार पूर्ण सुविधाओं युक्त डिजीटल प्रशिक्षण केन्द्र नहीं हैं। युवा सरकारी सेवाओं के लिए अनिवार्यता के कारण यह कोर्स कर रहे हैं। सरकारी एवं गैर सरकारी जॉब ही नहीं। " आज के जमाने में डिजीटल दक्षता बैगर कुछ नहीं हैं " कोर्स के दौरान सभी समस्याओं के समाधान में प्रशिक्षिका द्वारा प्रत्येक छात्र/छात्रा पर पूरा ध्यान दिया जाता हैं। सीखने का एक बेहतरीन वातावरण हैं। इस कोर्स में प्रवेश के लिए इंडसइंड बैंक लिमिटेड, वॉटर संस्था एवं सिकोईडीकोन ने मिलकर अक्टूम्बर, 2023 से 31 मार्च, 2024 तक 139 युवाओं को प्रशिक्षित कर रहे है।

देशज़ खाद्यान्न महोत्सव

सिकोईडिकोन संस्था एवं किसान सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में 7 फरवरी, 2024 को देशज़ खाद्यान्न (मोटे अनाज) के संरक्षण एवं उपयोग के प्रति वातावरण निर्माण करने के उद्देश्य से खाद्यान्न महोत्सव का आयोजन शीलकी डूंगरी में किया गया। जिससे स्वास्थ्य, कुपोशण, पर्यावरण एवं जलवायु परितर्वन जैसी समस्याओं से निपटा जा सके, जिसमें राजस्थान सहित 14 प्रान्तों के किसान–जन संगठन प्रतिनिधियों ने सार्थक भूमिका निभायी।

इससे पूर्व भी 24 दिसम्बर, 2015 को संस्था द्वारा देशज़ खाद्य महोत्सव का आयोजन किया था, जिसमें 11 प्रान्तों के किसान संगठनों एवं जन संगठनों, पर्यावरण विशेषज्ञों ने भाग ले मोटे अनाज के प्रति जन चेतना का संचार किया था, तब से संस्था एवं उसके सहयोगी संगठन सतत रूप में इस दिशा में जागरूकता का कार्य कर रहे हैं। पर्यावरणविदों की चेतावनी के बाद स्वस्थ जीवन हेतु मोटे अनाज की महत्ता समझ संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2023 को मिलेट वर्श घोषित किया गया।

7 फरवरी, 2024 को आयोजित खाद्यान्न महोत्सव में भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय बद्री नारायण जी चौधरी, बीज प्रमुख माननीय कृष्ण मुरारी जी, पर्यावरणविद् माननीय कपिल जी शाह, दीन दयाल शोध संस्थान के माननीय अतुलजी जैन, विधायक श्री रामावतार जी बैरवा आदि प्रमुख वक्ताओं ने कहा कि भारतीय समाज प्रकृति पूजक रहा है परन्तु परम्परागत ज्ञान, परम्परागत भोजन (देशी व मोटा अनाज) भोजन की थाली से लुप्त होने से व बीज पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कब्जा होने से स्वास्थ्य व पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

वक्ताओं ने गौ आधारित कृषि, जैविक कृर्षि के महत्व की व्याख्या करते हुये आगाह किया कि यह हमें विरासत में मिली है। इस समृद्ध विरासत (परम्परागत ज्ञान व बीज) को सहेजकर ही हम मानव सभ्यता को बचा सकते हैं। वक्ताओं ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा बीज–खाद पर कब्जे कर भूमि की घटती उर्वरा शक्ति पर चिन्ता प्रकट की एवं सरकार को भी स्पष्ट सन्देश दिया कि देशज़ अनाज़ (मोटे अनाज़) के उत्पादन पर सरकार को भी गम्भीरता से लेकर, व्यवहारिक व ठोस रणनीति व योजना बना इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल करनी होगी। साथ ही संस्था द्वारा देशज़ अनाज पर विगत वर्षों के किये जा रहे जागरण अभियान की सराहना की। इससे समाज को एक दिशा मिली है। कार्यक्रम में स्थानीय खाद्यान्न के प्रदर्शन हेतु स्टॉल, सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ प्रकृति ( ) की पूजा हेतु हवन भी किया गया।

पंचायती राज कार्यशाला

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में शाहबाद, चाकसू, निवाई, मालपुरा एवं फागी में पंचायतीराज प्रतिनिधियों के साथ क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों पर साझा समझ बनाने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

इसमें पंचायती राज के साथ मिलकर ग्रामों में सामाजिक, पर्यावरणीय आर्थिक विकास पर रूपरेखा, रणनीति व क्रियान्विति हेतु मन्थन हुआ। प्रतिवर्ष होने वाली इन कार्यशालाओं के सकारात्मक परिणाम भी सामने आये हैं। अनेक ग्रामों में चरागाह पर तारबन्दी, वृक्षरोपण अभियान में ग्राम पंचायतों व संस्था के सामूहिक प्रयासों से पर्यावरण संरक्षित हुआ है तो ग्रामों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

सरकारी – गैर–सरकारी समन्वय कार्यशाला

सिकोईडिकोन एवं किसान सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में शाहबाद, चाकसू, निवाई, मालपुरा एवं फागी में स्थानीय अधिकारियों एवं विभिन्न जनसंगठनों के साथ क्षेत्रीय मुद्दे, उनके समाधान को लेकर समन्वय कार्यशालाऐं आयोजित की गयी।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लाभ समाज के आखिरी व्यक्ति तक पहुंचना सुनिश्चित हो व राष्ट्रीय योजनाओं व कार्यक्रमों में आपसी सहयोग पर खुली चर्चा हुयी व भावी योजना का खाका तैयार किया गया।

जनसंगठनों ने राजस्थान सरकार द्वारा चरागाह, तालाबी व आबादी भूमि को अतिक्रमण मुक्त करने के निर्देश एवं नशामुक्त पहल हेतु चलाये जा रहे अभियान हेतु राज्य सरकार व अधिकारियों को धन्यवाद दिया व क्रियान्विति पर उन अधिकारियों का मत रहा कि यह अभियान पुलिस, प्रशासन, जन संगठनों एवं आम– जन के समन्वित प्रयासों से ही सफल हो सकते हैं।

कार्यशालाओं में स्वास्थ्य, कृषि, महिला एवं बाल विकास, पुलिस विभाग के अधिकारियों ने अपने–अपने विभागों की नवीन योजनाओं की जानकारी साझा की व इनकी जानकारी व लाभ आम जन तक पहुंचे, इस हेतु सहभागिता के आधार पर कार्य करने पर रणनीति बनी व विचार–मन्थन हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर जरुरतमंद बालिकाओं को स्कॉलरशिप-

11 अक्टूबर, 2023 को माधोराजपुरा शाखा कार्यालय परअन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया गया,जिसमें 30 जरुरतमन्द बालिकाओं को पढाई में सहयोगसेल्स फोर्स फाउडेशन परियोजना के सहयोगसे संस्था संस्था द्वारा 5—5 हजार रुपये की छात्रवृति दीगई।

जरुरतमंद एवं पात्र बालिकाओं का ही चयन हो इसके लिए गांव स्तर पर बने किशोरी बालिका समूह की बैठकों में चर्चा, विद्यालय, अध्यापकों एवं सामुदायिक संगठनों के प्रतिनिधियों से आपसी चर्चा के माध्यम से जिन बालिकाओं का नाम स्कॉलरशिप हेतु निकलकर आया उनका चयन करने हेतु एक कमेटी का गठन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत स्तर पर रा0उ0मा0 विद्यालय के प्रधानाचार्य, जनप्रतिनिधि, ग्राम विकास समिति प्रतिनिधि एवं संस्था प्रतिनिधियों की संयुक्त कमेटी ने बैठक आयोजित करके ऐसी बालिकाऐं जिनके पिता या माता—पिता दोनों ही नहीं है, परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है, बालिका के पिछली कक्षा में कम से कम 50 प्रतिशत से अधिक अंक हो व पढाई मे होशियार चयनित बालिकाओं को छात्रवृति का वितरण 11 अक्टूबर, 2023 को अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम आयोजित करके किया गया, जिसमें 100 बालिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्रीमान् सत्यनारायण मीणा ने बालिकाओं को स्कॉलरशिप देने पर संस्था की प्रशंसा करते हुये धन्यवाद दिया। किसान सेवा समिति अध्यक्ष हनुमान शरण यादव, कोषाध्यक्ष श्रीमती संगीता चौधरी ने अपने संबोधन में बालिकाओं को कहा कि यदि हम कठिन परिश्रम एवं मजबूत इच्छा शक्ति के साथ प्रयास करें तो हमारी सफलता को कोई नहीं रोक सकता है। बालिकाओं को अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस की महत्वता, पोक्सो एक्ट, चाईल्ड हेल्पलाईन, बालिकाओं के संरक्षण हेतु बने विभिन्न कानूनों एवं बालिकाओं के विकास हेतु बनी विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी बालिकाओं को दी गई।

पात्र बालिकाओं को स्कॉलरशिप मिलने से बालिकाओं का आत्मविश्वास बढा है, वो अपनी पढाई आगे नियमित जारी रख पाई है, उनको कॉलेज फीस, स्टेशनरी आदि में सहयोग मिला है।

और गोचर भूमि उपवन बनी

ग्राम विकास समिति डाबिच गुजरान व ग्राम पंचायत डाबिच द्वारा मई, 2023 में अपने गांव में चरागाह भूमि पर वृक्षारोपण कार्य हेतु प्रस्ताव किसान सेवा समिति को दिया गया, उसके बाद किसान सेवा समिति ने 12 जुन, 2023 को मासिक बैठक में डाबिच गुर्जरान के पास महादेव मन्दिर के पास की चरागाह भूमि में पौधे लगवाने व उनकी सुरक्षा हेतु तारबन्दी कार्य करवाने की सिफारिश संस्था से की गई।

किसान सेवा समिति की सिफारिश के बाद संस्था प्रतिनिधियों द्वारा डाबिच गुर्जरान में ग्राम विकास समिति व ग्राम पंचायत प्रतिनिधि के साथ बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें समिति सदस्यों ने बताया कि गांव में गोचर भूमि पर लोग अतिक्रमण करते जा रहे है अतः यदि यहां पर पौधे लगाये जाये तो अतिक्रमण भी नहीं होगा, पर्यावरण की दृष्टि से अच्छा रहेगा व जीव जन्तुओं का भी संरक्षण होगा, जिससे जैव विविधता को बढ़ावा मिलेगा। साथ मन्दिर की शोभा भी बढ़ेगी।वृक्षारोपपण का स्थान चिन्हित करने के साथ–साथ पौधों की सुरक्षा, पानी पिलाने, नियमित देख–रेख आदि पर विचार–विमर्श किया गया। संस्था प्रतिनिधि ने ग्राम विकास समिति प्रतिनिधियों को बताया कि पौधों की सुरक्षा की जिम्मेदारी यदि ग्राम विकास समिति एवं ग्राम पंचायत लेती है तो वृक्षारोपण का कार्य संस्था द्वारा करवाया जा सकता है।

ग्राम विकास समिति सदस्यों ने बताया कि डाबिच गुर्जरान में गुर्जर समुदाय के लोग है जो अपनी आजीविका के लिए भेड़–बकरी पालते हैं अतः पौधों की सुरक्षा बहुत जरूरी है इसके लिए तारबंदी करवाई जाये तभी पौधों की सुरक्षा हो पायेगी। पौधों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये निर्णय लिया गया कि तारबन्दी कार्य हेतु कांटेदार तारों का खर्च ग्राम विकास समिति व ग्रामवासी जन सहयोग से देंगे व गड्डूओं व पौधों की व्यवस्था संस्था द्वारा की जायेगी तथा खड्डे खुदवाने व पौधे लगवाने का कार्य नरेगा के माध्यम से ग्राम पंचायत द्वारा करवाये जाने का निर्णय लिया गया।

वृक्षारोपण व पौधों की सुरक्षा हेतु तारबन्दी का कार्य संस्था, ग्राम विकास समिति व ग्राम पंचायत तीनों ने मिलकर किया, जिसमें पौधा रोपण हेतु गड्डे खुदाई कार्य, वृक्षारोपण एवं पौधों के ठावले बनाने का कार्य नरेगा के माध्यम से ग्राम पंचायत के माध्यम से करवाया गया, पौधे व गड्डूओं का खर्चा संस्था द्वारा वहन किया गया तथा तारों के 12 बण्डलों का खर्चा जन सहयोग के माध्यम से एकत्र किया गया, जिसका विवरण इस प्रकार हैः–

क्र.सं.	कार्य विवरण	एजेन्सी का नाम	राशि
1	तार बन्डल	ग्राम विकास समिति एवं जन समुदाय	27300.00
2	गड्डू व पौधे	सिकोईडिकोन	103000.00
3	गड्डू खुदाई,वृक्षारोपण एवं पेड़ो के ठावल बनाने का कार्य	ग्राम पंचायत के माध्यम से नरेगा योजना के तहत	33000.00
		कुल खर्च	**163300.00**

आज सभी पौधे सुरक्षित है चरागाह में वृक्षारोपण हेतु कांटेदार पौधे नहीं लगकर करंज, नीम, शीशम, पीपल, जामुन, अर्जुन, बिल्वपत्र, अशोक जैसे धार्मिक आस्था से जुड़े छायादार पौधे लगाये गये, जिससे गांव वाले काफी खुश है। साथ ही पौधों की समय–समय पर देख–रेख व पानी पिलाने की जिम्मेदारी ग्राम विकास समिति अध्यक्ष रामचन्द्र गुर्जर एवं किसान सेवा समिति प्रतिनिधि सूरज जी माली, फतेहरामपुराव युवा मण्डल प्रतिनिधियों द्वारा ली गई, जिसको अच्छी तरह से निभा रहे है। ग्राम विकास समिति द्वारा चरागाह में उगी घास को निलाम किया गया, जिससे 4000.00 की आय भी प्राप्त हुयी।सीख– वृक्षारोपण के बाद पौधों की सुरक्षा एवं देख–रेख बहुत बड़ी चुनौती थी, लेकिन सामुदायिक सहभागिता, जनसहयोग व कनवरजेन्श के माध्यम से कार्य करने यह काफी सरल/ आसान हो गया है। साथ ही वृक्षारोपण के बाद इस वर्ष वर्षा की कमी होने के बावजूद 90 प्रतिशत से अधिक पौधे जीवित बचे है और अच्छी बढ़वार पर है। सरपंच साहब, शाखा प्रभारी श्री किशन जाट व श्री सत्यनारायण योगी की विशेष भूमिका रही।

रजि. क्रमांक 407 / जयपुर–1994–95

किसान सेवा समिति
(महासंघ)
सिकोईडिकोन, परिसर
शीलकी डूंगरी, चाकसू-303901, जिला-जयपुर (राज.)
मो.: 9828126321,9799749363
ई-मेल : kssmrajasthan@gmail.com

KISAN SEWA SAMITI
(MAHASANGH)
CECOEDECON Development Centre
Campus, Shilki Dungari, Chaksu-303901
District-Jaipur (Rajasthan)
Mob. : 9828126321,9799749363
E-mail : kssmrajasthan@gmail.com

क्रमांक : केएसएस(महासंघ)/ दिनांक ....

दिनांक: 22.05.2023

श्रीमान् मुख्य मन्त्री महोदय,
राजस्थान सरकार

किसान सेवा समिति महासंघ एक गैर राजनैतिक संगठन है जो खेती–किसानी पर जुड़े विभिन्न मुद्दों पर राज्य में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों से जलवायु परिवर्तन और बाजार नियन्त्रित व्यवस्था से किसान की आजीविका एवं खादय सुरक्षा गम्भीर रूप से प्रभावित हो रही है।
खेती किसानों को इस दुष्चक्र से बचाने के लिये निम्न बिन्दुओं पर प्रभावी कार्यवाही की अपेक्षा है।

1. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के समुचित क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया जाए। इस योजना के क्रियान्वयन में आ रही बाधाओं के निवारण हेतु फीडबैक तंत्र विकसित किया जाए अथवा स्थानीय स्तर पर हैल्प डेस्क गठित किया जाए।
2. जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाए, इस हेतु जैविक खेती की सर्टीफिकेशन की प्रक्रिया को सरल किया जाये वे जैविक खेती के प्रोत्साहन हेतु एकल खिड़की योजना शुरू की जाये। साथ ही जैविक उत्पादों की बिक्री हेतु बाजार तंत्र सुनिश्चित किया जाए।
3. किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य दिया जाये (लागत से 50% से अधिक)
4. ग्लोबल वार्मिंग या जलवायु परिवर्तन से कृषि पर पड़ रहे प्रभावों को ध्यान में रखते हुए अनुकूलन पर किसानों की समझ बनाने हेतु विशेष कार्य योजना बनायी जाये एवं उस कार्य योजना को पंचायत से जोड़ा जाए।
5. राज्य में पशुपालन आजीविका का बहुत बड़ा माध्यम है। इस हेतु राज्य में उजड़ते–सिकुड़ते चारागाहों गोचर, ओरण भूमि के संरक्षण हेतु चारागाह अतिक्रमण कानून का कठोरता से पालन किया जाए।
6. जीएम बीजों पर तब तक प्रतिबंध हो जब तक सार्वभौमिक रूप से यह साबित न हो जाए कि जीएम बीज स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं है।
7. बीजों के उत्पादन में राज्य आत्मनिर्भर हो सके, इस हेतु राज्य में कृषि अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विश्व– विद्यालयों व अन्य कृषि शोध संस्थानों को संसाधन सम्पन्न बनाया जाये।
8. किसानों की फसल की बुवाई के पूर्व पुनः समर्थन मूल्य पर बीज वितरण सुनिश्चित हो।
9. 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' पर निर्णय करने का अधिकार केवल सरकार के पास ना रहे, कम से कम एक तिहाई किसान ऐसे निर्णय करने वाली समिति में भागीदारी करें।
10. युवाओं को कृषि से जोड़ने हेतु विशेष कार्यशालाएं तहसील स्तर पर आयोजित की जाऐं व कृषि में नवाचार के लिए प्रोत्साहन हेतु फैलोशिप प्रदान की जाए।
11. पुराने जल स्रोतों का पुर्नरूत्थान एवं भूजल पुर्नभरण के लिए विशेष प्रयास किये जावे व तालाबी भूमि, नदी– नाले अतिक्रमण मुक्त हो। यह पूर्वजों की सम्भलायी गयी धरोहर है।
12. न्यूनतम समर्थन मूल्य खरीद सुनिश्चितता हेतु कानून बने।
13. प्राकृतिक आपदा, यथा अग्निकाण्ड व बाढ़ से होने वाले नुकसान पर पटवारी की रिपोर्ट को आधार मानकर मुआवजा देने की नीति बने।

भवदीय,

किसान सेवा समिति महासंघ

अध्यक्ष सचिव

City Contact : SWARAJ Campus, F-159-160, Sitapura Industrial Area, Jaipur-302022 RAJASTHAN

रजि. क्रमांक 407 / जयपुर–1994–95

किसान सेवा समिति
(महासंघ)
सिकोईडिकोन, परिसर
शीलकी डूंगरी, चाकसू-303901, जिला-जयपुर (राज.)
मो.: 9828126321,9799749363
ई-मेल : kssmrajasthan@gmail.com

KISAN SEWA SAMITI
(MAHASANGH)
CECOEDECON Development Centre
Campus, Shilki Dungari, Chaksu-303901
District-Jaipur (Rajasthan)
Mob. : 9828126321,9799749363
E-mail : kssmrajasthan@gmail.com

क्रमांक : केएसएस(महासंघ)/ दिनांक ....

दिनांक: 22.05.2023

श्रीमान् मुख्य मन्त्री महोदय
राजस्थान सरकार

विषयः– राज्य में गोचर भूमि अतिक्रमण मुक्त कर नरेगा में मेडबंदी करवाने के क्रम में।
पुनः स्मरण–पत्र।

महोदय,

किसान सेवा समिति महासंघ किसान, महिला एवं वंचित वर्ग के आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु प्रयासरत है।

इसी संदर्भ में आपसे आग्रह है कि राजस्थान में ग्रामीण किसानों की आजीविका का मुख्य स्त्रोत खेती एवं पशुपालन है। कृषि प्रकृति पर निर्भर रहने के कारण कृषि उत्पादन अनिश्चित है। परन्तु राज्य में स्थित गोचर भूमि पर, अतिक्रमणों की भरमार है, न तहसील प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित है, न पटवारियों की। सरकार की निष्क्रियता व लापरवाही से अतिक्रमणकर्ताओं के हौसले बुलन्द है एवं चरागाह भूमि सिकुड़ती जा रही है, जिसका सीधा असर पशुपालन एवं आम गरीब किसान की आजीविका एवं खाद्य सुरक्षा पर पड़ रहा है।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है, कि सम्पूर्ण गोचर भूमि की सीमा ज्ञान करवाकर मेडबन्दी करवा मवेशियों के लिये सुरक्षित करें, इससे पशुपालन बढ़ेगा। आम ग्रामीण जन की आजीविका एवं खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। पूर्व में भी आपको आग्रह किया जा चुका है।

अतः इस सम्बन्ध में आदेश फरमा अनुग्रहित करें।

भवदीय,

कैलाश गुर्जर
अध्यक्ष

हरिनारायण सूत्रकार
उपाध्यक्ष

भगवान सहाय दाधीच
सचिव

City Contact : SWARAJ Campus, F-159-160, Sitapura Industrial Area, Jaipur-302022 RAJASTHAN

किसान सेवा समिति महासंघ

आज़ादी के उपरान्त देश में विभिन्न संगठन अलग–अलग वर्गों के मुद्दों को लेकर किसान, गरीब व वंचितों की आवाज उठा रहे हैं। इसी क्रम में किसानों व गरीबों की आवाज को उठाने के लिए राज्य में अलग–अलग संगठनों में किसान सेवा समिति कार्य कर रही है। किसानों व वंचितों के मुद्दों की राज्य–स्तर पर आवाज़ को मज़बूत करने के लिए 2004 में किसान सेवा समिति महासंघ का गठन हुआ जो सतत् रूप से किसानों, गरीबों, वंचितों, महिलाओं व दलितों की आवाज़ को मज़बूत कर रही है।

महासंघ केवल जड़स्तर के मुद्दों को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर ले जाता है अपितु राज्य व राष्ट्र स्तर पर नीतियों को जड़स्तर तक पहुंचाने व मुख्य रूप से क्रियान्वित हेतु कार्य करती है।

परिचय :-

किसान सेवा समिति महासंघ राज्य स्तरीय जन संगठन है– जो किसानों, महिलाओं, दलित, आदिवासी एवं वंचित वर्ग के सामाजिक–आर्थिक विकास एवं इनके हितों से जुड़े मुद्दों व अधिकारों की क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पैरवी करना है। जो विशुद्ध गैर राजनीति जन आन्दोलन पर आधारित है। महासंघ का प्रमुख कार्य राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दों को प्रकाश में लाना व उन पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाना है। समान विचारधारा वाले संगठनों को संगठित करने के साथ–साथ उसमें राष्ट्रीय बोध, समतामूलक, शोषण मुक्त समाज की रचना आदि नीतियों के प्रति सहमति बनाना भी महासंघ का लक्ष्य है। हम मूल्य आधारित ऐसी शक्ति हासिल करना चाहते हैं कि सरकारों को ऐसी नीतियों को बदलने को मजबूर करने की क्षमता हासिल कर सके जो जनहित की न हो। स्थानीय ब्लॉक एवं जिला स्तर पर संगठनों एवं समुदाय प्रतिनिधियों की जागरूकता एवं क्षमता वृद्धि करना ताकि वे सामुदायिक अधिकारों को वास्तविक रूप से लागू करने एवं सुनिश्चित करने में स्थानीय सुशासन प्रक्रिया, पंचायत राज एवं जन–आन्दोलनों के साथ सहज़ता से जुड़े रहे। ऐसे मुद्दों पर प्राथमिकता रहेगी, जो आमजन से जुड़े हुए हों, विशेषतः प्रयास– दलित, वंचित, महिला, बच्चे व किसान से जुड़े होंगे।

वर्तमान समय के कार्य :-

जलवायु परिवर्तन, शिक्षा की विसंगतियों एवं समानीकरण, महंगाई, राहत कार्य सर्वे, जैव परिवर्धित एवं जैव विविधता, अकाल, चारा–पानी, सार्वजनिक वितरण, असंगठित मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिले इस सन्दर्भ में महिला उत्पीड़न, भू–अधिकार, नरेगा, घुम्मकड़ जातियों के हितों पर, राज्य बजट पर, स्वास्थ्य।

भावी योजना:- राज्य स्तरीय संगठन के प्रतिनिधि राज्य के सभी जिलों से जुड़े हों तथा हम एकजुट होकर राज्यस्तरीय प्रयासों को ज्यादा गति दो पायें।

प्राथमिकताएं :-

जलवायु परिवर्तन ,राज्य की स्थायी अकाल एवं जलनीति बनवाना व प्रभावी क्रियान्वयन करवाने का सतत प्रयास। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ समुदायों तक पहुँचाना सुनिश्चित करना। पंचायतों को उनके अधिकार दिलवाना। खाद्य सुरक्षा की बिल की अनुपालन करना। शिक्षा के अधिकार बिल की सही अनुपालना।

महिलाओं व दलितों के अधिकारों को दिलवाना। भू–अधिकार से वंचितों को अपना अधिकार दिलवाना। साझा समझ वाली संस्थाओं से नेटवर्किंग

सीख :- जीवन वास्तव में अनवरत सीखने एवं विकास करने की प्रक्रिया है, सीखने की प्रक्रिया प्रभावी एवं उपयोगी हों, अतः प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने साथ–साथ उस समाज की ताकत एवं कमज़ोरियों से परिचित हो जिसका वह अंग है।

किसान सेवा समिति महासंघ

स्वराज कैम्पस, एफ-159-160, सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर-302022 (राज.)

टेलीफोन : 0141-2771488, 7414038811/22/33 फैक्स : 0141-2770330

UNIQUE PRINT IN • 9414363099